

# डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 8, मरकुस 4:1-34, दृष्टान्तों पर

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह मार्क 4:1-34, दृष्टान्तों पर सत्र 8 है।

नमस्ते, मार्क के सुसमाचार के माध्यम से अपना अध्ययन जारी रखते हुए आपके साथ वापस आकर अच्छा लगा।

इस बिंदु तक, पहले तीन अध्यायों में, हमारा अधिकांश ध्यान यीशु द्वारा अपने सार्वजनिक मंत्रालय में किए गए कार्यों पर केंद्रित रहा है। हमने उनके और धार्मिक नेताओं के बीच चमत्कार, भूत-प्रेत भगाने और टकराव की एक विस्तृत विविधता देखी है। मार्क अध्याय चार के साथ, हम उनकी शिक्षा के एक विशेष रूप पर थोड़ा सा बदलाव करते हैं, जो दृष्टान्तों में किया जाता है।

अब, मार्क के साथ हम जो कुछ देखते हैं, वह यह है कि मार्क अपने दृष्टान्तों में उनका इस्तेमाल करता है; आप देखेंगे कि यीशु अपने पूरे मंत्रालय में धार्मिक नेताओं के खिलाफ बोलने के तरीके के रूप में उनका इस्तेमाल करता है। हालाँकि, मार्क के चौथे अध्याय में दृष्टान्तों का इस्तेमाल थोड़ा अलग है। इसमें उनके शिष्यों के लिए डिज़ाइन किया गया एक और शिक्षण पहलू भी है।

और मार्क मैथ्यू के समान ही कुछ करता है, जो कि इन दृष्टान्तों को लेना और उन्हें मुख्य रूप से एक अध्याय में रखना है। मैथ्यू मैथ्यू अध्याय 13 में ऐसा करता है, और हम इसे मार्क अध्याय 4 में देखते हैं। इसलिए, हम यीशु के कार्यों से थोड़ा हटकर यीशु की कुछ शिक्षाओं को उनकी शिक्षा के एक विशिष्ट रूप में देखते हैं, जो कि दृष्टान्त हैं।

इस कारण से, हमारे लिए यह उपयोगी हो सकता है कि हम मार्क अध्याय चार में कुछ उदाहरणों को देखने से पहले दृष्टान्तों और यीशु द्वारा दृष्टान्तों के उपयोग के बारे में थोड़ा समय सोचें। यीशु के दृष्टान्त शायद उनकी शिक्षाओं में सबसे प्रसिद्ध हैं। भले ही कोई व्यक्ति यीशु के बारे में कुछ भी न जानता हो, लेकिन संभावना है कि वह उनके दृष्टान्तों के बारे में कुछ न कुछ जानता हो।

उदाहरण के लिए, नेक सामरी, उड़ाऊ पुत्र, सरसों का बीज। ये ऐसे शब्द हैं जो हमारी बोलचाल की भाषा में, चीज़ों के बारे में हमारी समझ में अपना स्थान बना चुके हैं। उदाहरण के लिए, ऐसे समाज या समूह हैं जो खुद को नेक सामरी कहते हैं।

यह अब एक तारीफ है, या उड़ाऊ पुत्र लौटता है, जो कि बातचीत में अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला एक मुहावरा है। और स्नोडग्रास, प्रोफेसर स्नोडग्रास, जो दृष्टान्तों पर कुछ बेहतरीन काम करते हैं, उनकी एक किताब है जिसका नाम है स्टोरीज विद इंटेन्ट, जो, मुझे लगता है, एक बहुत अच्छा सारांश है। वह निम्नलिखित कथन करते हैं।

अगर यह सच है कि यीशु वह पात्र है जिसमें हर धर्मशास्त्री अपने विचार डालता है, तो दृष्टांत वह घड़ा है जिसका इस्तेमाल वे अक्सर डालने के लिए करते हैं। मुद्दा यह है कि दृष्टांतों में कुछ ऐसा है जो यीशु पर चर्चा करने के लिए एक प्रवेश बिंदु है। और आप समझ सकते हैं कि ऐसा क्यों है।

वे प्रभावशाली हैं। वे आंशिक रूप से इसलिए प्रभावशाली हैं क्योंकि वे कहानियाँ हैं। और एक कथा के रूप में, वे एक ऐसी दुनिया की कल्पना करते हैं जहाँ एक व्यक्ति किसी विचार से सामना कर सकता है, किसी विचार में लीन हो सकता है।

वे प्रवचन का एक विशिष्ट रूप हैं जिसमें सत्य को कहानी में लपेटा जाता है। आप जानते हैं, मैं अच्छे उपदेश के बारे में सोचता हूँ। अक्सर अच्छे उपदेश में एक ऐसा उदाहरण होता है जो शक्तिशाली होता है, जो सत्य या कहानी का संचार करता है, या यह कहानी में सत्य का संचार करता है।

और इसलिए यह सत्य की प्रत्यक्ष घोषणा के अलावा किसी अन्य तरीके से विचार व्यक्त करता है। और मुझे लगता है कि दृष्टांतों का एक आकर्षण यही है। यीशु के मामले में, या दृष्टांतों वाली भीड़ के मामले में, शिक्षक और उनके शिष्यों के बीच एक अप्रत्यक्ष मार्ग होता है।

बयान देना बहुत आसान है, और जब कोई बयान देता है, तो उसका विरोध होता है। यह लगभग स्वाभाविक हो जाता है। मैं संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरपूर्वी भाग में न्यू इंग्लैंड में रहता हूँ, और इस क्षेत्र में संदेह और संशयवाद सद्गुण हैं।

अगर कोई कुछ कहता है, तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया शायद सच नहीं होती। लेकिन कहानी कुछ अलग करती है। अगर आप चाहें तो कहानी पिछले दरवाजे से निकल जाती है।

किर्केगार्ड कहानी की ताकत के बारे में बात करते हैं, जहाँ आप बिना जाने ही सच्चाई बताने का हिस्सा बन जाते हैं। कहानी में कुछ ऐसा है जो कम आक्रामक या ज़्यादा दिलचस्प है। लेकिन, ज़ाहिर है, एक दृष्टांत सिर्फ एक कहानी नहीं है।

अपने व्यापक अर्थ में, यह एक विस्तारित सादृश्य को संदर्भित करता है। और मैं थोड़ी देर बाद दृष्टांतों की परिभाषा के बारे में बात करूँगा। लेकिन यह एक विस्तारित सादृश्य है।

यह एक अलंकारिक बात कहने का प्रयास करता है। आप जानते हैं, यीशु के दृष्टांत अधिकांश भाग के लिए एक सामान्य संदर्भ ग्रहण करते हैं। वे परमेश्वर के राज्य की पूर्वकल्पना करते हैं।

यीशु अक्सर परमेश्वर के राज्य की प्रकृति और गुणवत्ता या विशेषताओं को समझाने के लिए या कम से कम परमेश्वर के राज्य की एक तस्वीर पेश करने के लिए दृष्टांतों का उपयोग करेंगे। दूसरे शब्दों में, उन्हें इरादे से बताया जाता है। और वे ऐतिहासिक रूप से लंगर डाले हुए हैं।

वे पहली सदी के संदर्भ में आते हैं। वे पहली सदी के संदर्भ में अर्थपूर्ण लगते हैं। और दृष्टांतों की व्याख्या करने में हमेशा यही चुनौती होती है: 21वीं सदी की चीज़ों की समझ के बिना दृष्टांत के ऐतिहासिक संदर्भ को समझने की कोशिश करना।

कुछ तो सीधे-सादे हैं। कुछ बारीक हैं। आप जानते ही हैं, इनमें बहुत विविधता है।

दूसरों को यह निर्धारित करना मुश्किल लगता है कि वास्तव में इरादा क्या है। और यहां तक कि दृष्टांत जो ज़्यादातर किसी चीज़ को समझने के बारे में होते हैं, वे भी बिना किसी आधार के ज्ञान नहीं होते। वे श्रोता के साथ इस तरह से बातचीत कर रहे हैं कि श्रोता समझ सके।

अब, जब हम दृष्टांतों की व्याख्या को देखते हैं, उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक रूप से बोलते हुए, मुझे लगता है कि हमें हाल की शताब्दियों में दो सामान्य प्रवृत्तियों के बारे में पता होना चाहिए। सबसे पहले, 19वीं शताब्दी के अंत तक दृष्टांतों के अधिकांश व्याख्याकारों की प्रवृत्ति उन्हें रूपक बनाने की थी। यानी दृष्टांत के विभिन्न तत्वों को किसी चीज़ के लिए खड़ा करना या प्रतीकात्मक रूप से कुछ का प्रतिनिधित्व करना।

यह कहानी का एक पाठ है। यह जरूरी नहीं था कि यह वहां हो, कुछ ऐसा जो जरूरी नहीं था, यीशु के इरादे का एक हिस्सा था। अब, रूपक दृष्टिकोण का कुछ आधार यीशु में ही प्रतीत होता है।

कुछ दृष्टांत हैं, जिनमें से एक पर हम आज विचार करेंगे, जहाँ यीशु ने बहुत अधिक प्रतीक और अर्थ दिए हैं। उदाहरण के लिए, जब हम बीज बोने वाले के दृष्टांत को देखते हैं, तो वह प्रतिनिधि अर्थ देता है। और यह किसी बिंदु पर रूपक दृष्टिकोण को उचित ठहराता प्रतीत होता है।

इसमें कठिनाई यह है कि यीशु अपने सभी दृष्टांतों की एक ही तरह से व्याख्या नहीं करते हैं। दृष्टांतों की एक बड़ी विविधता है। मैं यह मानने की प्रवृत्ति रखता हूँ कि यीशु ने उन दृष्टांतों की व्याख्या की जिनके लिए रूपकात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता थी।

और जिन्होंने ऐसा नहीं किया, उन्होंने ऐसा नहीं किया। हालाँकि, हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि 19वीं सदी के अंत तक यह रूपक प्रवृत्ति काफी हद तक इस धारणा पर आधारित थी कि पवित्रशास्त्र का चार गुना अर्थ था। चर्च की एक लंबी अवधि के लिए, पवित्रशास्त्र की व्याख्या शाब्दिक रूप से की जा सकती थी, जो वास्तव में कहा जा सकता था, एक रूपक अर्थ, यानी, विभिन्न तत्वों का प्रतीकात्मक अर्थ जो प्रतिनिधित्व कर सकता है, एक नैतिक दृष्टिकोण, जो इस बारे में बात करेगा कि कोई व्यक्ति अपनी दुनिया को कैसे बदलता है या समझता है, और एक स्वर्गीय विचार, जो कि यह आध्यात्मिक अस्तित्व का वर्णन कैसे कर सकता है।

तो, आपके पास पवित्रशास्त्र के इस चार गुना अर्थ में, कई शताब्दियों तक पवित्रशास्त्र की व्याख्या एक ऐसी प्रक्रिया के अनुसार की गई जिसमें रूपकात्मक समझ शामिल थी। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दृष्टांत, विशेष रूप से, प्रतिस्पर्धी रूपकों के लिए बहुत सहायक या ग्रहणशील पाए जाएंगे। दिलचस्प बात यह है कि प्रतिस्पर्धी रूपकों को स्वीकार किया जा सकता है।

दृष्टांतों की अलग-अलग रूपक व्याख्याएँ होना असामान्य नहीं था, और यह किसी तरह एक बढ़िया और स्वीकार्य दृष्टिकोण प्रतीत होता था। इसलिए, चर्च की अधिकांश शताब्दियों के लिए,

दृष्टांतों की व्याख्या, आपने उन्हें रूपक बनाकर व्याख्या की। हालाँकि, दूसरा दृष्टिकोण, जो 19वीं शताब्दी के आसपास आना शुरू हुआ, वह आधुनिक विद्वानों द्वारा रूपक को अस्वीकार करना था।

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि 19वीं सदी के अंत में एडॉल्फ जूलीचर ने यह सवाल उठाया कि एक साधारण गैलीलियन के रूप में यीशु ने इतने जटिल तरीके से कैसे शिक्षा दी। यह ज्ञानोदय के प्रति प्रतिक्रिया की शुरुआत थी और एक शिक्षक के रूप में यीशु के लिए एक चुनौती थी, जिसके पास एक ऐसी पद्धति होगी जो बड़ी रूपक शिक्षाओं की अनुमति देगी। इसलिए, विशेष रूप से वे दृष्टांत जो लंबे और खींचे गए थे, जिनमें प्रतीकात्मक अर्थ दिए गए थे, यह विचार शुरू हुआ कि यह चर्च का उत्पाद होना चाहिए।

शायद बहुत ही सरल दृष्टांत, जो प्रकृति में अधिक कहावतों जैसे लगते हैं, एक सरल गैलीलियन से अधिक समझ में आ सकते हैं। कई मामलों में, भले ही जूलिचर के तर्क अब प्रभावी नहीं हैं, दृष्टांतों की व्याख्या करने के लिए बहस रूपक और रूपक या रूपक विधियों को अस्वीकार करने के बीच सेट की गई है, जो कि यीशु के शिक्षण के इरादे का हिस्सा है। और मैं इसे इसलिए उठाता हूँ क्योंकि यह बहस इस सवाल के इर्द-गिर्द घूमती है कि समझने के लिए दृष्टांत का कितना हिस्सा महत्वपूर्ण है।

क्या दृष्टांत में मौजूद तत्व वास्तव में किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करते हैं? क्या छवि और वास्तविकता के बीच कोई पत्राचार है? अगर कोई पत्राचार है, तो उस पत्राचार के लिए कौन ज़िम्मेदार है? क्या पाठक उस पत्राचार के लिए ज़िम्मेदार है? क्या यीशु उस पत्राचार के लिए ज़िम्मेदार है? यह मुझे इस सवाल पर वापस ले जाता है। दृष्टांत क्या है? ध्यान रखें कि शायद ही ऐसा कुछ हो जो मैं कह सकता हूँ जो सभी दृष्टांतों के लिए सच हो। वास्तव में, कोई भी परिभाषा जो सभी दृष्टांतों को कवर करने के लिए बहुत व्यापक है, शायद ही कभी मददगार हो।

और हर दृष्टांत की अपने आप में जांच की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, हम सिर्फ़ यह मानकर नहीं चल सकते कि दृष्टांत सांसारिक कहानियाँ हैं जिनका अर्थ स्वर्गीय है। यह सच है, लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ है।

यह उतना मददगार नहीं है। बहुत से दृष्टांत स्वर्ग के बारे में नहीं हैं। वे इस धरती पर जीवन के बारे में हैं।

वे दृष्टांतों से कहीं ज़्यादा हैं। वे निश्चित रूप से वही हैं। कुछ दृष्टांत रूपक हैं।

कुछ दृष्टांत उपमाएँ हैं, लेकिन कुछ दृष्टांत इससे कहीं ज़्यादा हैं। वे जीवंत हो सकते हैं। वे अजीब हो सकते हैं, और कभी-कभी वे बिल्कुल सादे और उबाऊ हो सकते हैं।

केनेथ बेली, एक कवि, शायद, मुझे लगता है कि मैंने दृष्टांत के बारे में अब तक सुनी सबसे अच्छी परिभाषा दी है। उन्होंने उन्हें काल्पनिक उद्यान कहा जिसमें असली टोड थे। मुझे यह पसंद है।

मुझे वास्तविक टोडों वाले काल्पनिक उद्यानों का विचार पसंद है क्योंकि मुझे लगता है कि इससे मेरे दिमाग में एक तस्वीर बनती है कि दृष्टांत क्या है, और यही दृष्टांत करने की कोशिश होती है, यानी दर्शकों के दिमाग में कुछ ऐसा बनाना जो काल्पनिक और काल्पनिक दोनों हो, लेकिन फिर भी सच हो। दृष्टांतों को सोचने और विचार करने के लिए प्रेरित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह उन चीजों में से एक है जो हम दृष्टांतों में देखते हैं।

वे साधारण दंतकथाएँ नहीं हैं, बल्कि वे प्रतिक्रिया को उत्तेजित करती हैं। वे किसी कार्य को प्रेरित और प्रेरित करना चाहते हैं, विशेष रूप से ईश्वर या यीशु के प्रति कार्य। हम इसे पूरे दृष्टांतों में देखते हैं।

दूसरे शब्दों में, वे मजबूर करते हैं। और इसलिए, मैं दृष्टांतों के इस विचार पर वापस आता हूँ कि वे एक विस्तारित सादृश्य के रूप में हैं जिसका उपयोग समझाने या मनाने के लिए किया जाता है। एक सादृश्य के रूप में, यह समझ में आता है कि वे आसानी से रूपक बन सकते हैं।

जो कहा जा रहा है और जो जानना चाहा जा रहा है, उसके बीच कुछ प्रकार का पत्राचार है। आपके पास विभिन्न प्रकार के दृष्टांत हैं। आपके पास समानताएं, विस्तारित उपमाएं और उनमें थोड़ा सा कथानक विकास है।

वे सीधे-सादे होते हैं। कुछ दृष्टांत बहुत हद तक प्रश्न दृष्टांत होते हैं, जहाँ पूरा दृष्टांत एक प्रश्न होता है। आप में से कौन, वगैरह, अक्सर ऐसा दृष्टांत किस रूप में होता है।

और ये प्रश्नवाचक दृष्टांत पाठक को प्रश्न का उत्तर देने के लिए मजबूर करते हैं, अक्सर 'नहीं' के साथ। नहीं, मैं उस दृष्टांत में व्यक्ति की तरह व्यवहार नहीं करूँगा। ऐसे दृष्टांत हैं जो अधिक विस्तृत हैं, जिनमें कथानक हैं, जो किसी विशेष घटना का वर्णन करते हैं, और जो अक्सर कोई समस्या या संभावना पैदा करते हैं।

आमतौर पर संवाद होता है जो यह संकेत देता है कि समाधान कहाँ से शुरू होता है। कुछ दृष्टांत अपने संदर्भ को बहुत हद तक छिपाते हैं। दूसरे शब्दों में, दृष्टांत को इस तरह से बताया जाता है कि अंत में ही पाठकों को कहानी में बताई गई बातों के लिए आत्म-निंदा मिलती है, लेकिन उन्हें अंत तक यह एहसास नहीं होता कि वे वास्तव में खुद के बारे में निर्णय ले रहे हैं।

दृष्टांतों के कई अन्य प्रकार भी हैं। एक बहुत ही सामान्य प्रकार "कितना अधिक" प्रकार है, जो यीशु की शिक्षाओं और द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म दोनों में आम रहा होगा।

यह ईश्वर से कहीं अधिक प्रकार का दृष्टांत है। जब हम इसे दृष्टांत की परिभाषाओं के साथ देखते हैं, तो हमें बस यह महसूस करने की आवश्यकता है कि जिसे दृष्टांत कहा जा सकता है उसका कोई बहुत विशिष्ट रूप नहीं है। दृष्टांत बहुत अलग-अलग संरचनाओं में मौजूद हैं।

और इसलिए, प्रत्येक दृष्टांत, कई मायनों में, अपने आप में खड़ा होना चाहिए। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि हम दृष्टांतों की किसी भी विशेषता की पहचान नहीं कर सकते। कई

दृष्टांतों के बारे में हम जो कुछ कह सकते हैं, वह यह है कि वे अक्सर संक्षिप्त होते हैं, कभी-कभी संक्षिप्त भी होते हैं।

इसमें अक्सर अनावश्यक विवरण शामिल नहीं होते। दृष्टांत बहुत पतले होते हैं, अगर आप चाहें तो, बड़ी कहानियों में भी। दृष्टांतों में मोटी कहानी नहीं होती।

उद्देश्य बहुत कम दिए जाते हैं। शायद ही कभी हमें कोई कारण पता चलता है कि किसी दृष्टांत में कुछ पात्र ऐसा क्यों करते हैं, हालांकि कभी-कभी हमें कुछ कारण मिल जाते हैं। वे सादगी से चिह्नित होते हैं।

शायद ही कभी, अगर कभी, एक ही दृश्य में दो से अधिक समूह या दो व्यक्ति एक साथ हों। यह आमतौर पर एक बहुत ही सरल संरचना होती है, अक्सर संतुलित होती है। दृष्टांत ज्यादातर मनुष्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उदाहरण के लिए, ईसप की दंतकथाओं के विपरीत, जहां जानवर मुख्य भूमिका निभाते हैं।

दृष्टांत, ज्यादातर मामलों में, इंसानों पर केंद्रित होंगे। और यही मानवीयता उन्हें लोगों के लिए एक उपयोगी दर्पण बनाती है। वे काल्पनिक हैं, लेकिन वे रोज़मर्रा की ज़िंदगी से हैं।

बेशक, इसमें कुछ छद्म यथार्थवादी तत्व हो सकते हैं, कुछ चरम तत्व जो कहानी का हिस्सा हैं। मुझे लगता है कि दृष्टांतों की व्याख्या करने में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उस प्रश्न को खोजने की कोशिश की जाए जिसका उत्तर यह दृष्टांत देने का प्रयास कर रहा है। इसलिए, उदाहरण के लिए, जब कोई दृष्टांत इस तरह से शुरू होता है, परमेश्वर का राज्य ऐसा है... उस उत्तर को प्रेरित करने वाला प्रश्न क्या है? हम मार्क के कुछ दृष्टांतों को देखते हुए इस बारे में थोड़ी बात करेंगे।

दृष्टांतों में अक्सर अप्रत्याशितता या उलटफेर के तत्व होते हैं। हालांकि, अप्रत्याशितता को देखने के लिए, किसी को ऐतिहासिक संदर्भ के बारे में पता होना चाहिए। अक्सर, आश्चर्यजनक क्षण उस संदर्भ से होता है जिसमें इसे बताया जा रहा है।

अक्सर महत्वपूर्ण बात अंत में होती है। यदि आप जानना चाहते हैं कि किसी दृष्टांत का चरम कहाँ है, तो आमतौर पर यह अंत में आता है। यीशु के दृष्टांतों के साथ, वे लगभग हमेशा ईश्वर और उसके राज्य के बारे में ईश्वर-केंद्रित होते हैं।

इसमें अक्सर पुराने नियम का संकेत होगा। अक्सर, एक दृष्टांत को उसके अलग-अलग हिस्सों के बजाय पूरे रूप में समझना सबसे अच्छा होता है, खासकर अगर मैं इस विचार पर वापस लौटता हूँ कि परमेश्वर का राज्य दृष्टांतों जैसा है। उन दृष्टांतों की व्याख्या करते समय अक्सर एक गलती की जाती है कि सभी अलग-अलग व्यक्तियों को रूपक के रूप में प्रस्तुत करना शुरू कर दिया जाता है, जबकि वास्तव में यह पूरी बात का अर्थ है।

परमेश्वर का राज्य एक ऐसी स्त्री की तरह है जो, आप जानते हैं, फिर भर जाती है, जो खो जाती है, खोजती है, और पागलों की तरह खोजती है। और इसलिए, हम यह नहीं कहना चाहते कि, ठीक

है, मोती इसका प्रतिनिधित्व करता है, महिला इसका प्रतिनिधित्व करती है, घर इसका प्रतिनिधित्व करता है। यह उस घटना की पूरी तस्वीर है जो परमेश्वर के राज्य की तरह है।

दृष्टांतों में सटीकता होती है। उनकी अपनी सीमाएँ होती हैं। हमें बहुत सावधानी से उन बातों को भरना चाहिए जो हमें लगता है कि छूट गई हैं।

दृष्टांत नहीं चाहते कि हम उन पर वास्तविक समय थोपें। हमें दृष्टांत के बारे में सोचते समय बहुत सावधान रहना चाहिए, ठीक है, नौकर के वहाँ पहुँचने और वापस रिपोर्ट करने और वापस आने के बीच समय बीतना चाहिए था, और अचानक, हम जो कहा गया था उसके बजाय जो छूट गया था उसके बारे में बहुत बड़ी बात करने लगते हैं। और मैं अक्सर सोचता हूँ कि अंत में, हमें यह समझना होगा कि दृष्टांत यीशु का एक शिक्षण तत्व है।

यह अत्यंत सहायक है क्योंकि तब यह धारणा है कि हम यीशु द्वारा अपने गैर-दृष्टांत कथनों और दृष्टांतों में कही गई बातों के बीच संबंध पा सकते हैं, कि उन्हें एक साथ मिलना चाहिए। और इसलिए, यदि हम दृष्टांतों की ऐसी व्याख्याएँ पाते हैं जिनका यीशु की किसी भी शिक्षा से कोई संबंध नहीं है, तो हम दृष्टांतों की व्याख्या करने के मामले में संभवतः नाजुक, खतरनाक आधार पर हैं, फिर से, यह मानते हुए कि यीशु एक सुसंगत शिक्षक थे। ये कुछ तत्व हैं जिनके बारे में मैं चाहता था कि हम दृष्टांतों में प्रवेश करते समय थोड़ा सोचें, दृष्टांत जो बहुत सरल लग सकते हैं, फिर भी बहुत समस्याग्रस्त भी हो सकते हैं।

इसलिए, जब हम मरकुस अध्याय 4 को देखते हैं, जिसमें हमारे पास दृष्टांतों का एक संग्रह है, तो मैं मरकुस 4, 1 से 20, और फिर 21 से 34 में कुछ दृष्टांतों को देखना चाहता हूँ। मैं उनमें से प्रत्येक पर नहीं जा रहा हूँ, लेकिन हमें यह समझने में मदद करना चाहता हूँ कि यीशु की शिक्षा में दृष्टांत कैसे काम करते हैं। मैं बस कुछ मुख्य बिंदुओं पर ध्यान देना चाहता हूँ।

तो चलिए मैं बीज बोने वाले के दृष्टांत से शुरू करता हूँ, जो संयोगवश, मुझे हमेशा से एक गलत नाम लगा है। इसका बोने वाले से ज़्यादा मिट्टी से संबंध है, लेकिन चर्च के इतिहास के प्रकाशकों ने इसे बोने वाले का दृष्टांत कहा है, और इसलिए, हम उसी के साथ चलते हैं। फिर से, यीशु ने झील के किनारे शिक्षा देना शुरू किया।

उसके चारों ओर इतनी बड़ी भीड़ जमा हो गई थी कि वह एक नाव में सवार हो गया और उसे झील पर खड़ा कर दिया, जबकि किनारे पर मौजूद लोग पानी के किनारे पर थे। यह पहली आयत में है, और यह उस बात के अनुरूप है जो हमने मार्क के सुसमाचार में देखा है, जो एक शिक्षक के रूप में लोकप्रियता है। इसलिए, इस शिक्षण की स्थापना हमारे द्वारा ज्ञात बातों के अनुरूप है।

और यहीं पर हम उनके पहले सारांश कथनों को पढ़ते हैं। उन्होंने दृष्टांतों के द्वारा उन्हें बहुत सी बातें सिखाई, और अपनी शिक्षा में कहा, सुनो, एक किसान बीज बोने के लिए बाहर गया, और जब वह बीज बिखेर रहा था, तो कुछ बीज रास्ते में गिर गए, और पक्षी आकर उन्हें खा गए। कुछ पत्थरीली जगहों पर गिरे, जहाँ उन्हें ज़्यादा मिट्टी नहीं मिली।

मिट्टी उथली होने के कारण यह जल्दी उग आया, लेकिन जब सूरज निकला, तो पौधे झुलस गए, और वे जड़ न होने के कारण सूख गए। अन्य बीज कांटों के बीच गिरे, जो बड़े होकर पौधों को दबा गए, इसलिए वे अनाज नहीं दे पाए। फिर भी कुछ बीज अच्छी मिट्टी पर गिरे।

यह उग आया और बढ़ा और फसल पैदा की, 30, 60 या यहाँ तक कि 100 गुना तक। पहले आठ छंद। तो, यहाँ पहले आठ छंद अलग-अलग मिट्टी पर गिरने वाले बीज का वर्णन करते हैं।

यह दिलचस्प है। यह समझने की कोशिश में बहुत समय व्यतीत हो गया है कि यह वास्तव में फिलिस्तीनी कृषि प्रथाओं को दर्शाता है या नहीं। और फिर, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट रूप से एक सादृश्य है और यह कि तैयार और अप्रस्तुत मिट्टी पर बीज गिरने का क्या वर्णन है, यह बताने की थोड़ी कोशिश की गई है।

और फिर दृष्टांत का अर्थ बाहरी परिस्थितियों का प्रश्न है। ध्यान दें कि यह वही बीज है, यह वही बोनो वाला है, एकमात्र परिवर्तनशील यह है कि मिट्टी कहाँ गिर रही है। श्लोक नौ, उपज।

मुझे यह दिलचस्प लगता है। यह कोई बेतुकी उपज नहीं है, यह 30, 60 या 100 गुना भी नहीं है। यह निश्चित रूप से भरपूर फसल है।

यह मुझे उत्पत्ति 26, 12 की थोड़ी याद दिलाता है, जहाँ प्रभु इसहाक को सौ गुना भरपूर फसल का आशीर्वाद देते हैं। और इसलिए शायद वहाँ भी एक संकेत या प्रतिध्वनि है। लेकिन फिर बहुत दिलचस्प बात यह है कि इस दृष्टांत के बाद, श्लोक नौ में, यीशु ने कहा, जिसके पास सुनने के लिए कान हैं, वह सुन ले।

यह यिर्मयाह 5:21 और यहजेकेल 12:2 की याद दिलाता है, जहाँ इस्राएल के लोगों के बारे में कहा गया है कि उनके पास आँखें तो हैं, लेकिन वे देख नहीं सकते और उनके पास कान तो हैं, लेकिन वे सुन नहीं सकते। अब उस कथन के अर्थ पर व्यापक रूप से बहस हो चुकी है और आम तौर पर दो विकल्प हैं। क्या यह है कि जिसके पास कान हैं, हर किसी को ध्यान देना चाहिए और जवाब देना चाहिए? या यह है कि जिसे कान दिए गए हैं, आध्यात्मिक कान, उसे सुनना चाहिए? और यहाँ तक कि मार्क भी उन विकल्पों में से किस पर स्पष्ट रूप से नहीं है।

एक तरफ़, इसका संदर्भ भीड़ से है। वह हर किसी से बात कर रहा है। वह यह बयान हर किसी को दे रहा है।

फिर भी, श्लोक 11 और 12 में, वह इस बारे में बात करता है कि कैसे शिष्यों को, राज्य और परमेश्वर का रहस्य आपको दिया गया है, लेकिन बाहर के लोगों को, सब कुछ दृष्टांतों में कहा जाता है, जो शायद संकेत देता है कि शायद आध्यात्मिक स्वागत है। दिलचस्प बात यह है कि जब हम यिर्मयाह और यहजेकेल के अंशों को देखते हैं, तो इनमें भी दोनों का भाव है कि लोगों को प्रतिक्रिया देनी चाहिए, लेकिन वे नहीं दे रहे हैं।

इससे यह बात और भी पुख्ता होती है कि हर किसी को इसे सुनना चाहिए और साथ ही एक उद्देश्यपूर्ण छिपाव भी बनाया जा रहा है, और शायद हम इस पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देकर गलत

होंगे। मुझे लगता है कि यहाँ इस अंश का अर्थ यह है कि भीड़ को यह आह्वान किया गया है कि अगर आपको इसे सुनना चाहिए और प्रतिक्रिया देनी चाहिए, तो यह भावना है कि हर किसी को इसे सुनना चाहिए। हम यहाँ फिर से श्लोक 10 को देखते हैं, जब वह अकेला था, इसलिए फिर से भीड़ में नहीं, दृश्य बदल गया है।

12 जिनके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, ये वे 12 हैं जिनके लिए यीशु ने प्रार्थना की और फिर विचार किया और अपने और अपने आस-पास के अन्य लोगों के लिए चुने। तो, आपके पास 12 और अन्य हैं, जो यीशु के अनुयायियों को इंगित करते हैं जो 12 नहीं थे, उन्होंने उनसे दृष्टांतों के बारे में पूछा। उसने उनसे कहा कि परमेश्वर के राज्य का रहस्य या रहस्य तुम्हें दिया गया है, लेकिन बाहर के लोगों के लिए, सब कुछ दृष्टांतों में कहा जाता है।

और फिर वह एक कारण बताता है, जिसके बारे में मैं एक सेकंड में बात करूँगा। लेकिन यहाँ जो बात दिलचस्प है, वह यह है कि जब हम रहस्यों के बारे में बात करते हैं, तो यह किसी रहस्यमय या अजीब चीज़ का विचार नहीं है। जब नया नियम रहस्य या रहस्य के प्रकट होने की बात करता है, तो यह उस चीज़ के बारे में है जिसे परमेश्वर ने छिपा कर रखा था जिसे अब खोला जा रहा है।

उदाहरण के लिए, पॉल आमतौर पर इसे किसी ऐसी चीज़ के लिए संदर्भित करता है जो पुराने नियम में छिपी हुई थी जिसे अब सटीक और सत्य के रूप में प्रकट किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, सुसमाचार राष्ट्रों में जा रहा है। यहाँ मार्क में जो रहस्य प्रकट किया जा रहा है, वह परमेश्वर का राज्य है, वह यह है कि यीशु का आगमन परमेश्वर के राज्य का आगमन है।

यह एक रहस्य है जो अब उजागर हो रहा है। और शिष्यों को स्पष्ट रूप से बताया जा रहा है। इसमें एक अंतर है।

हम 12 शिष्यों और बाहरी लोगों के बीच लगातार समूह-बाहरी भेदभाव देख रहे हैं। हम इसे मार्क में देख रहे हैं। परमेश्वर के राज्य का रहस्य आपको दिया गया है, लेकिन बाहर के लोगों के लिए, सब कुछ दृष्टांतों में कहा गया है।

और इसलिए, शिक्षा में भी, यीशु कुछ व्याख्या देने वाले हैं जो 12 और उनके आस-पास के लोगों को विशेष रूप से दी जा रही है। और फिर वह सुसमाचारों में दृष्टांतों के बारे में शायद सबसे विवादास्पद बयान देता है। ताकि, श्लोक 12, वे हमेशा देखते रहें लेकिन कभी समझ न सकें, और हमेशा सुनते रहें लेकिन कभी समझ न सकें। अन्यथा, वे बदल सकते हैं और क्षमा किए जा सकते हैं।

अब, यह भाषा यशायाह अध्याय 6, श्लोक 9 से 10 की याद दिलाती है। और बहस यह है, सवाल यह है कि क्या यीशु जानबूझकर बाहरी लोगों को अंदरूनी लोगों में बदलने से रोकने के लिए दृष्टांतों में बोल रहे हैं? हालाँकि, जब हम यशायाह के संदर्भ को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि इससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि यीशु इस मार्ग का क्या इरादा रखते हैं। यशायाह 5 से 6 में, संदर्भ एक न्याय है जो इस्राएल पर आ रहा है क्योंकि, और एक दृष्टांत है जो यशायाह में

भी बताया गया है, दाख की बारी का रूपक क्योंकि इस्राएल फल पैदा करने में विफल रहा क्योंकि उन्होंने पहले ही परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया था।

परमेश्वर ने उनसे अपना संरक्षण हटा लिया है, और अब अशशूर इस्राएल पर परमेश्वर के न्याय के प्रतिनिधि बन गए हैं। तब यशायाह की चेतावनियाँ दो कारणों से अनसुनी हो जाएँगी। पहला, इस्राएल की पहले से ही प्रदर्शित विश्वासघात के कारण।

और दूसरा, क्योंकि अब उनकी बेवफ़ाई उनके खिलाफ़ परमेश्वर के न्याय का एक माध्यम बन जाती है। तो, यहाँ हम जो देखते हैं वह यह है कि परमेश्वर ने यशायाह में इस्राएल की अस्वीकृति का जवाब दिया और फिर अपने उद्देश्य और न्याय को प्राप्त करने के लिए उनकी अस्वीकृति को और भी ठोस बना दिया। हम इस विचार के बारे में पहले ही मार्क में थोड़ी बात कर चुके हैं, सुसमाचार में पहले से ही कठोर विचार के साथ, फिरौन से जुड़ा हुआ, बेशक, एक क्लासिक उदाहरण के रूप में।

वह कठोर था, उसके पास एक कठोर, जिद्दी प्रतिक्रिया थी, और फिर उसकी प्रतिक्रिया दृढ़ हो गई ताकि परमेश्वर की संप्रभु योजना को प्रदर्शित किया जा सके, ताकि परमेश्वर को यह प्रदर्शित किया जा सके कि वह अपने लोगों को बंधन से बाहर निकालता है। इसलिए, मुझे लगता है कि यहाँ, कई मायनों में, यीशु के शब्द एक निर्णय कथन हैं जो उसे अस्वीकार करने से उत्पन्न होते हैं, कि वह एक ऐसे समूह से दृष्टांतों में बात कर रहा है, जो विशेष रूप से धार्मिक नेतृत्व के संदर्भ में सोचा जाता है, जिस तरह से यशायाह मार्ग भी काम करता है, एक ऐसे समूह से जो पहले से ही उसे अस्वीकार कर चुका है। हमने इसे पहले बेलज़ेबुल पर विवाद के साथ देखा था।

अब, वह अस्वीकृति एक कठोर वास्तविकता बन जाती है, जो परमेश्वर के उद्देश्य का हिस्सा होगी। इस्राएल के धार्मिक नेताओं की अस्वीकृति कूस की ओर चलने का हिस्सा है, और इसलिए आप इसे खेलते हुए भी देखते हैं। और इसलिए, मुझे लगता है कि जब हम इस बहुत कठिन अंश को देखते हैं कि यीशु दृष्टांतों में क्यों बोलते हैं, तो इसमें सबसे पहले यह प्रदर्शित करने का विचार है कि वास्तव में कौन सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया दे रहा है।

दृष्टांत जानने की इच्छा जगाते हैं। हम शिष्यों में यह देखते हैं, जहाँ शिष्य पूछते हैं, और वे जानना चाहते हैं कि दृष्टांतों का क्या अर्थ है। इसलिए, दृष्टांत ऐसी प्रतिक्रिया को भड़काते हैं जो या तो यीशु के पक्ष में होती है या यीशु के विरुद्ध।

हम देखेंगे कि यह और भी गहरा होता जाएगा। लेकिन यह भी कि दृष्टांत यीशु द्वारा वर्तमान धार्मिक नेतृत्व के विरुद्ध निर्णय जारी करने का एक और तरीका है जो कि भविष्यवक्ताओं द्वारा किए गए कार्यों के समान है। और यीशु ने मार्क में यह कहा, अक्सर धार्मिक नेतृत्व और उसके लोगों की तुलना उन लोगों से की जिन्होंने इस्राएल के इतिहास में परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया था।

और फिर यीशु ने बारह और उनके साथ आए लोगों से सवाल पूछा, क्या तुम इस दृष्टांत को नहीं समझते? फिर, तुम किसी भी दृष्टांत को कैसे समझोगे? मुझे लगता है कि वे शिष्यों की ओर से अज्ञानता को भी उजागर कर रहे हैं, जो अभी भी ठीक से समझ नहीं पाए हैं कि क्या कहा जा रहा

है, जिसे हम मार्क के सुसमाचार में देखेंगे। फिर उन्होंने समझाना शुरू किया। किसान वचन बोता है।

कुछ लोग उस मार्ग के किनारे बीज की तरह होते हैं जहाँ वचन बोया जाता है। जैसे ही वे इसे सुनते हैं, शैतान आता है और उनमें बोया गया वचन छीन लेता है। दूसरे लोग, चट्टानी जगहों पर बोए गए बीज की तरह, वचन सुनते हैं और तुरंत इसे खुशी से ग्रहण करते हैं।

लेकिन चूँकि उनमें जड़ नहीं होती, इसलिए वे थोड़े समय तक ही टिकते हैं। जब वचन के कारण उन पर मुसीबत या सताहट आती है, तो वे जल्दी ही गिर जाते हैं। इसलिए, दूसरे लोग, काँटों के बीच बोए गए बीजों की तरह, वचन सुनते हैं।

लेकिन इस जीवन की चिंताएँ, धन-संपत्ति का धोखा, और अन्य चीज़ों की इच्छाएँ आकर वचन को दबा देती हैं, जिससे वह फलहीन हो जाता है। दूसरे लोग, अच्छी मिट्टी पर बोए गए बीज की तरह, वचन सुनते हैं, उसे स्वीकार करते हैं, और तीस, साठ या यहाँ तक कि सौ गुना अधिक फसल पैदा करते हैं। मैं वहाँ सभी अलग-अलग विचारों पर चर्चा नहीं करूँगा।

स्पष्टीकरण बहुत स्पष्ट लगता है। लेकिन ध्यान दें कि यह इस सवाल का जवाब दे रहा है कि लोग यीशु की शिक्षाओं को क्यों स्वीकार कर रहे हैं, अस्वीकार कर रहे हैं, या कहीं बीच में हैं। और इसलिए यीशु यहाँ जो हो रहा है उसकी एक तस्वीर बनाते हैं, कि दोष बोनो वाले का नहीं है और दोष बीज का नहीं है।

यह मिट्टी ही है जो प्रतिक्रिया निर्धारित करती है। कुछ अलग-अलग विवरण फिर एक तस्वीर बनाते हैं जो यह समझाने की कोशिश करते हैं कि हर कोई यीशु का अनुसरण क्यों नहीं कर रहा है, क्यों कुछ लोग पहले बहुत उत्साह से यीशु का अनुसरण करते हैं और फिर जब मुसीबतें आती हैं तो पीछे हट जाते हैं। मेरा मानना है कि वहाँ एक संकेत है, थोड़ा सा जो हम शिष्यों से उम्मीद कर सकते हैं: कि वे खुशी से प्राप्त करते हैं, लेकिन फिर जब मुसीबतें आती हैं, तो वे लड़खड़ा जाते हैं।

हम इसे न केवल दुखभोग में बल्कि पूरे समय देखेंगे। और फिर, अंततः, अच्छी मिट्टी का सबूत निरंतर फल है, जो इस विचार में विश्वासयोग्यता और प्रतिबद्धता होगी। फिर हम श्लोक 21 से 34 तक आगे बढ़ते हैं।

हमें दृष्टान्तों की एक श्रृंखला मिलती है। मैं इस समय उन सभी पर चर्चा नहीं करूँगा। मैं केवल कुछ पर प्रकाश डालना चाहता हूँ।

आइए हम 4:21 से 22 तक देखें। और उसने उनसे कहा, " क्या तुम दीपक को कटोरे या खाट के नीचे रखने के लिए लाते हो? इसके बजाय, क्या तुम उसे दीपक पर नहीं रखते? क्योंकि जो कुछ छिपा है, वह प्रगट होने के लिए है, और जो कुछ छिपा है, वह प्रगट होने के लिए है। यदि किसी के पास सुनने के लिए कान हों, तो वह सुन ले।

फिर से, मैं उस कथन पर वापस आ रहा हूँ। एक बात जो मुझे यहाँ दिलचस्प लगती है वह यह है कि मार्क के सुसमाचार में स्टैंड पर रखे दीपक का दृष्टांत कैसे काम करता है। यह ल्यूक के सुसमाचार से थोड़ा अलग है।

लूका के सुसमाचार में, जो चीजें छिपी हुई हैं उनका उद्देश्य यह है कि वे एक दिन प्रकट होंगी। दूसरे शब्दों में, लूका में जोर इस बात पर है कि जो अभी छिपा हुआ है वह एक दिन प्रकट होगा। यहाँ, यह वास्तव में चीजों को छिपाने के उद्देश्य के बारे में बात करता है।

इसका मतलब यह है कि जो कुछ भी छिपा है, उसे प्रकट किया जाना चाहिए। इसलिए, मार्केन दृष्टांत में यह विचार है कि यीशु कह रहे हैं कि ईश्वरीय इरादा चीजों को छिपाने का है ताकि उन्हें प्रकट किया जा सके। चीजों को छिपाए रखने का एक उद्देश्य है।

और वह उद्देश्य रहस्योद्घाटन की वास्तविकता है। और इसका मतलब यह नहीं है कि लूका और मार्क अनिवार्य रूप से एक दूसरे से असहमत हैं। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि क्या यीशु, मेरा मानना है, अलग-अलग कारणों से, अलग-अलग तरीकों से दृष्टांतों, समान दृष्टांतों का उपयोग कर सकते थे।

पद 31 से 32 एक बहुत ही प्रसिद्ध दृष्टांत है। शायद हम इसे पद 30 में उठाएंगे। और फिर, उन्होंने कहा, हम क्या कहें कि परमेश्वर का राज्य कैसा है? या हम इसका वर्णन करने के लिए किस दृष्टांत का उपयोग करें? यह सरसों के बीज जैसा है, जो कि जमीन में बोया जाने वाला सबसे छोटा बीज है।

फिर भी जब इसे लगाया जाता है, तो यह सभी बगीचे के पौधों में सबसे बड़ा हो जाता है, जिसकी शाखाएँ इतनी बड़ी होती हैं कि हवा के पक्षी इसकी छाया में बैठ सकते हैं। और इसलिए, सवाल उठता है कि यह किस बारे में है? परमेश्वर का राज्य उन सचित्र दृष्टांतों में से एक है। खैर, मुझे लगता है कि जोर इस बात पर नहीं है कि यह कितना बड़ा हो जाता है, हालाँकि शाखाओं और हवा के पक्षियों के बारे में भाषा है।

यह एक बहुत ही अजीब दृष्टांत होगा अगर यह इस बारे में बात करे कि परमेश्वर का राज्य कितना महान होने वाला है। क्योंकि अगर आप चारों ओर देखें और सरसों के बीज की झाड़ी या सरसों के बीज के पेड़ को देखें, तो यह एक बड़े देवदार के आकार की तुलना में बहुत छोटा है। और मुझे लगता है कि अगर यह दृष्टांत परमेश्वर के राज्य के आकार और महानता पर जोर देने के लिए था, तो शायद यह अधिक संभावित विकल्प होता।

तो, यहाँ जिस बात पर जोर दिया गया है, वह वास्तव में इसकी शुरुआत की सबसे छोटी प्रकृति है। ध्यान दें कि परमेश्वर का राज्य सरसों के बीज की तरह है, जो कि सबसे छोटा बीज है। और लोगों ने इस पर वैज्ञानिक रूप से बहस की है।

वे कहते हैं, ठीक है, यह तकनीकी रूप से सबसे छोटा बीज नहीं है। क्या यीशु गलत है? क्या वह अपने बीजों को नहीं जानता? और यह मुद्दा नहीं है, इसकी सटीकता नहीं है, बल्कि यह मान्यता

है कि सरसों का बीज एक बहुत छोटा बीज था। और इसलिए, यह दृष्टांत जो चित्र प्रस्तुत करता है वह परमेश्वर के राज्य की अशुभ शुरुआत है।

परमेश्वर का राज्य सरसों के पौधे की तरह है, जो सबसे छोटे तरीके से शुरू होता है, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, और फिर बढ़ता है और बढ़ता ही रहता है। और यह एक जैविक संबंध है। अंत में, अध्याय 4, दृष्टांत, श्लोक 33 और 34 में, हमें एक सारांश कथन मिलता है।

इसी तरह के कई दृष्टांतों के ज़रिए, यीशु ने उनसे उतना ही वचन बोला जितना वे समझ सकते थे। उसने दृष्टांत का इस्तेमाल किए बिना उनसे कुछ नहीं कहा। मुझे लगता है कि यह उनकी शिक्षा में दृष्टांतों के महत्व को दर्शाता है।

लेकिन जब वह अपने शिष्यों के साथ अकेला था, तो उसने सब कुछ समझाया। और इसलिए यह दृष्टांत शिक्षा है जो हर किसी को दी जा रही है, लेकिन शिष्यों के पास दृष्टांतों की व्याख्या आ रही है। हम अगली बार अध्याय 4 और मार्क के बाकी हिस्सों के साथ समाप्त करेंगे।

धन्यवाद।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह मार्क 4:1-34, दृष्टांतों पर सत्र 8 है।